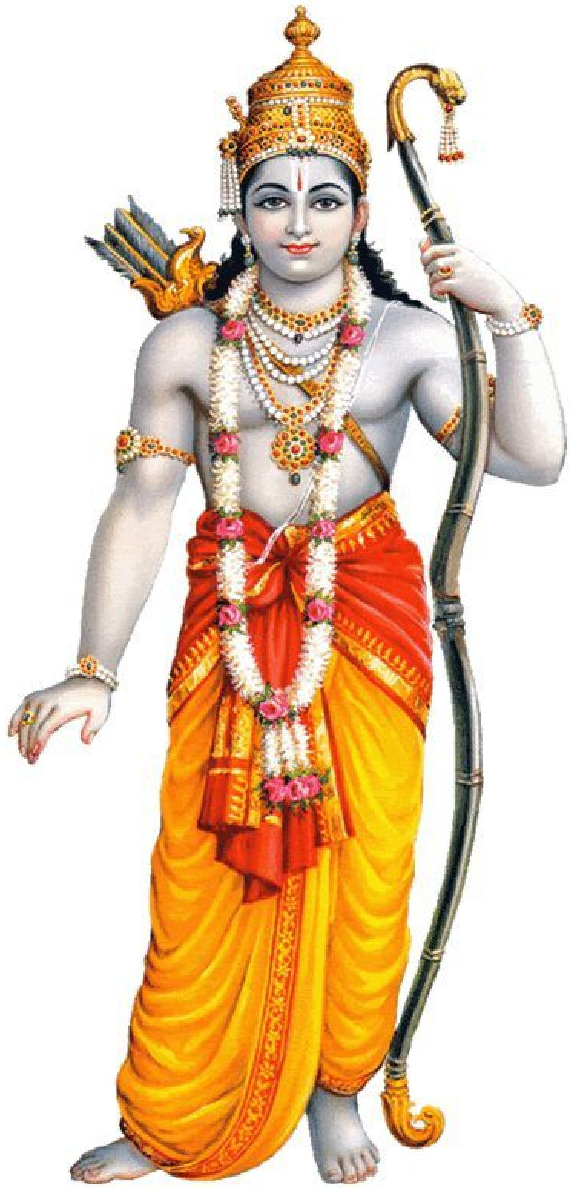
ऐसे है श्रीराम - एक सरल लघुपुस्तिका



मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का नाम कौन भारतवासी नहीं जानता ? जिसके मंदिरों , कथाओं और गुणगान से इस देश का आकाश सदैव गुञ्जित रहता है उस महान पुरुष का यशोगान कोई सनातन धर्म को मानने वाला कैसे नहीं करता होगा?

लेकिन आज का भारत बड़ा अनूठा भारत है, यहाँ एक गली एक मुहल्ले में दसियों धर्मो पन्थो को मानने वाले लोग एक साथ उठते बैठते और काम करते है। हाँ धार्मिक रीतिरिवाज़ पूजा पाठ, नमाज़ रोज़ा आज भी सभी का अपना अपना व्यक्तिगत मामला है पर अनेकों अवसर ऐसे भी होते है जब हमारा मन जिज्ञासा करता है की दूसरे धर्म में हो चुके महापुरुषों का जीवन कैसा था ? उनकी क्या शिक्षाएँ थी ? क्यों उन्हें इतना मान और सम्मान दिया जाता है आदि आदि अनेक ऐसे प्रश्न है जिनका इस तरह के सर्वधर्ममय वातावरण में उठना और घुमना स्वाभाविक है।

अक्सर ये देखा गया है की बच्चें इस बारे में अधिक उत्सुक रहते है? लेकिन दिक्कत तब होती है जब वे अपने प्रश्न उन लोगों से पूछते है जिन्हे स्वयं भी उस बारे में अधिक जानकारी नहीं होती। सुनी-सुनाई बातों से बने उत्तर कई बारे बच्चों के मन में समझ की जगह नफ़रत की दीवार खड़ी कर देते है। मेरे मन में भी ये प्रश्न उठा की अगर कोई मुस्लिम या ईसाई बालक या बन्धु श्रीराम के बारे में सरल शब्दों में जानना चाहे, उनके व्यक्तित्व को समझना चाहे तो उसके पास क्या उपाय है?

रामायण अथवा अन्य धार्मिक किताबों के शब्द और भाषा ,कई बार उसी धर्म के पढ़े लिखें व्यक्तियों को भी नहीं समझ आती तब अन्य धर्मों के लोगो की कठिनाई की कौन कहे? ऐसे मैं मुझे एक ऐसी छोटी-किताब लिखने का मन किया जो बिना किसी घुमावदार या लच्छेदार भाषा या कठिन शब्दों के, आम जनभाषा में इन महान चरित्रों को समाज के सामने रख सके।

इस प्रेरणा के चलते यह छोटी सी किताब 'ऐसे थे श्रीराम' आप सबके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है विश्व के प्रत्येक धर्म के अनुयायी इस किताब को पढ़कर श्रीराम के मानवीय सद्‌गुणों और महान कार्यों को समझ पाएँगे।

आभार

इस किताब को लिखने के लिए मैंने हमारे समय के महान तपस्वी एवं विचारक पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्‌वारा रचित वाङ्‌ग्मयो का सहारा लिया है जिसमे श्रीराम और उनके जीवन के प्रेरणादायी रत्नों को आचार्यश्री ने अत्यन्त कुशलता से चुना और प्रस्तुत किया है। मैं उनके इस महान कार्य के लिए उनका सदैव ऋणी रहूँगा।

-- निवेदक ऋषि आचार्य

ऐसे थे श्रीराम

बचपन में ही थे सबसे अलग - गुणों का खान

श्रीराम का जन्म अयोध्या नगर के राजकुल में हुआ था जिसे रघुवंश के नाम से जाना जाता था। वे महाराज दशरथ की प्रथम सन्तान थे। श्रीराम के बचपन से ही उनकी विशेषताओं का दर्शन होना शुरू हो जाता है

- बचपन में जब वे अपने भाइयों ले साथ गुरुकुल में पढ़ाई के लिए गए तो अपनी अद्भुत स्मरणशक्ति और एकाग्रता के कारण थोड़े ही समय में उन्होंने गुरुकुल के समस्त विषयों का अध्ययन कर वहाँ सिखाई जा रही समस्त विद्याएँ जैसे अस्त्र-शस्त्र, तर्क-शस्त्र, संगीत, आयुर्वेद, धनुर्वेद, स्थापत्यवेद, न्याय, धर्म, नीति, सदाचार, शरीरशास्त्र, योग, भाषा, व्याकरण, नागरिक शास्त्र, भूगोल, गणित, इतिहास, विज्ञान जैसे विषयों में निपुणता प्राप्त कर ली।

- अयोध्या के राजा की सन्तान होने के बावज़ूद भी वे गुरु के आश्रम में इन बातों के अहंकार को भूल करके अन्य साधारण

बालकों से साथ मिलकर आश्रम की साफ-सफ़ाई और व्यवस्था में हाथ बटाते थे।

- अन्य बालकों की तरह ही गुरुकुल के नियमों के अनुसार गाँव में जाकर भिक्षा माँगकर लाने में आपने कभी शर्म का अनुभव नहीं किया क्योकि आप गुरु की आज्ञा का पालन करने में ही मग्न रहते थे ।

- आपने आश्रम में अपने से छोटे शिष्यों और भाइयों को भी सभी विषयों की शिक्षा प्रत्येक अवसर दी।

- बचपन से ही श्रीराम अपने नागरिकों को अधिक से अधिक सुखी एवं संपन्न कैसे बनाया जाये इसकी योजनाएँ बनाते रहते थे।

- इतनी विद्याएँ, थोड़े से समय में ही पाकर भी आप (श्रीराम) ज्ञान के अहंकार से कोसों दूर थे - हर सुबह उठकर नियम से वह पहले अपने माता-पिता और गुरु के चरणों में शीश झुकाते थे। कोई भी कार्य को करने से पहले माता-पिता और गुरु की आज्ञा लेते थे तभी काम को शुरू करते थे।

- रात्रि में गुरु के साथ रहते हुए श्रीराम पहले गुरु के सोने पर उनके पैर दबाते थे और बार बार गुरु के समझाने के बाद ही सोने के लिए जाते थे।

- रात के आख़री पहर में अपने गुरु के उठने के पहले श्रीराम उठकर तैयार हो जाते थे और गुरु को प्रणाम कर उनके लिए पुजा सामग्री का प्रबंध करने चले जाते थे।

वीरता की खान श्रीराम

- बचपन से ही आप वीरता का दूसरा नाम थे। ऋषि विश्वामित्र के साथ जाते हुए बचपन में ही आपने जँगल में रहने वाली महा भयँकर असुर स्त्री 'ताड़का' का वध कर दिया जिसने अपने आतंक से वन में तपस्या कर रहे ऋषि मुनियों को परेशान कर रखा था।

- ऋषि विश्वामित्र के आश्रम पहुँच कर एक महान वीरपुरुष की तरह आप सारे ऋषियों को निश्चिन्त होकर यज्ञ शरू करने के लिए कहते है और खुद एक वीर सिपाही की तरह धनुष-बाण लेकर आश्रम की सुरक्षा करने के लिए मुस्तैदी से खड़े हो जाते है।

- कुछ ही देर में वहाँ राक्षसों की एक बड़ी सेना लेकर मारीच और सुबाहु नाम के दो भयंकर राक्षस आ धमके लेकिन महावीर राम में आयु छोटे होकर भी अपने युद्ध कौशल से राक्षसों के समेत उनकी पूरी सेना को नष्ट कर दिया।

- आपके बाण की शक्ति इतनी थी की एक वार से ही मारीच राक्षस कोसों दूर जाकर गिरा।

- मिथिला नगरी में सीता जी के विवाह की शर्त थी की जो वीर शिवजी के महाप्रतापी धनुष को अपने हाथों से उठाकर उसपर डोरी (प्रत्यंचा) चढ़ायेगा उसी से सीता जी का विवाह होगा।

- उस अवसर पर देश विदेश के अनेक राजा-महाबली वहॉ आये थे , पर सभी असफल रहे। एक बार तो दसहज़ार राजाओं ने मिलकर भी धनुष को उठाने की कोशिश की लेकिन धनुष अपनी जगह से हिला भी नहीं, ऐसे में श्रीराम को जब उनके गुरु ने आज्ञा थी तो वे उस शिवधनुष के पास आकर बड़ी विनम्रता से उसे प्रणाम करने लगे। अन्य राजा उनके कोमल शरीर को देखकर हँस रहे थे लेकिन सबके देखते ही देखते श्रीराम ने एक हाथ से ही धनुष को यों उठा लिया जैसे कोई हाथी अपनी सूँड़ से घास के तिनके को उठाता है।

क्षमा की साक्षात् मूर्ति श्रीराम

- शिवधनुष को तोड़ने के साथ ही बड़ा भयंकर शोर हुआ और थोड़ी ही देर में शिवजी के शिष्य परशुराम जी वहाँ आ गये जो की बड़े क्रोधी और एक क्षण में लोगो को मृत्युदण्ड तक दे देते थे।

- जनक की सभा में सबके सामने उन्होंने लगातार श्रीराम जो अपशब्द कहे, बुरा-भला कहा और बार बारे युद्ध की चुनौती दी , लेकिन श्रीराम अपने से बड़े और गुणों में महान परशुराम जी की महानता जानते थे, ऐसे क्रोध और तनाव से भरे माहौल में भी वे शान्त होकर सिर झुकाकर परशुराम जी के कटु वचनों को सहते

रहे और आखिर तक यही कहते रहे के मैं तो आपका दास हूँ , बालक हूँ , अगर मेरे यह धनुष को तोड़ने से आपको पीड़ा या दुःख हुआ हो तो मुझे क्षमा कर दिजीए।

बुराई से भी अच्छाई को ढूंढ निकालने वाले - श्रीराम

- विवाह के बाद जब महाराज दशरथ ने आपके राज्याभिषेक का निर्णय ले लिया उसी समय आपकी सौतेली माता और महाराज दशरथ की तीसरी रानी कैकेयी ने बहकावें में आकर श्रीराम को १४ सालों तक राजपाठ छोड़कर जंगल जाने की माँग की और अपने बेटे भरत को राजगद्दी सोपने की माँग की।

- यह खबर सुनते ही सारी अयोध्या के लोग कैकेयी पर क्रोधित हो उठे और उसे भाँति भाँति के अपशब्द कहने लगे पर राजहंस से समान समझदार श्रीराम ने कैकेयी से मुस्कुराते हुए कहा - हे माता वन जाने की आज्ञा देकर तो आपने मुझ पर बड़े अहसान किये है क्योकि वन में अनेक ऋषि-मुनियों के दर्शन होंगे और वनवासी बन्धुओं से भी मेरे सम्बन्ध अच्छे होगे। इस प्रकार मुझे तो इस पूरी बात में मेरा कल्याण ही नज़र आ रहा है।

- रही बात भरत को राजा बनाने की तो माता मेरे सबसे प्यारे भाई को राजगद्दी मिले इससे ज्यादा ख़ुशी की बात मेरे लिए क्या हो सकती है?

- बिना कोई तर्क किये श्रीराम ने एक क्षण में राज्य का विचार त्याग कर, अपने सारे राजसी आभूषण और गहने उतार दिए, सन्यासियों के सामान साधारण वस्त्र और तुलसी माला पहनकर वे अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ जंगल की और चले गए।

- जाते समय भी श्रीराम ने सभी माताओं और महाराज दशरथ से आशीर्वाद लिया , कैकेयी को प्रणाम किया और फिर अयोध्या के निवासियों को बहुत समझा बुझा कर सबको प्रणाम करते हए वन की और चले गए।

जंगल के कष्टों में भी मुस्कुराते थे -श्रीराम

अयोध्या से दूर आने के बाद श्रीराम थक से गए अतः थकान मिटने के लिए उन्होंने थोड़ी देर आराम करना चाहा, लेकिन महलों के निवासी श्रीराम के लिए वहाँ न तो नर्म बिस्तर था और न ओढ़ने के लिये मख़मली रजाई।

चलते समय जिसके चप्पल भी रेशम जैसे नर्म होते थे, वहीं श्रीराम आज बिना शिकायत के अपने ही हाथों का तकिया बनाकर ज़मीन पर ही लेट गये। ग्रीष्म के धूप से बचाव करने के लिए जिसके सर पर सोने की छत होती थी | दसियों सेवक पंखा झलने को तैयार खड़े रहते थे वे दशरथ जी के प्राण रघुकुल के सर्वोत्तम पुष्प श्री राम आज चिलचिलाती धूप से अपने को बचाने के लिए घने पेड़ की छाया ढूंढ रहे है|

कमल से कोमल चरणों ने पहली बार जब लकड़ी के चप्पल पहने तो अनभ्यास के कारण पैरों में सूजन आ गयी थी| अधिक दूर तक चलना भी संभव नहीं था इसलिए अपने ही हाथों से अपने पैर दबाते है लेकिन छुपकर, क्योंकि अगर लक्ष्मण और सीता देख लेंगे तो वे अपनी नींद भूलकर आपके पास ही बैठे रहेंगे|

अगली सुबह अयोध्या के मन्त्री ने, जब श्रीराम और लक्ष्मण को इस तरह केश और जटा बढ़ाये, लकड़ी के चप्पल पहने देखा तो उससे रहा नहीं गया और वह बार बार श्रीराम को अयोध्या लौट चलने के लिए कहने लगा- तब श्रीराम ने उसे मुस्कुराते हुए कहा- हे तात आप मेरी इस अवस्था को देख कर इस तरह दुखी न हो , माता-पिता की आज्ञा पालन के सुख के आगे जंगल का यह दुःख कुछ भी नहीं।

जंगल में अधिक दूर तक जाकर श्रीराम ने वहॉ ऋषि वशिष्ठ के आश्रम में जाकर उनको प्रणाम किया और फिर हाथ जोड़कर कहने लगे - हे ऋषि श्रेष्ठ कृपया मुझको इस वन में कोई ऐसा स्थान बतायें जहाँ मैं अपनी पत्नी और छोटे भाई सहित घाँस और पत्तो की झोपड़ी बना कर रह सकूँ। एक राजा के बेटे, सोने से जड़े महलों और चाँदी की दीवारों से बने कमरों में रहने वाले श्रीराम आज बिना किसी दुःख के टूटी झोपड़ी में भी रहने के लिए तैयार है। और उसके लिए भी स्थान माँगने के लिए ऋषि से आज्ञा ले रहे है।

ऋषिवशिष्ठ के सुझाव के अनुसार उन्होंने चित्रकूट पर्वत पर अपना निवास-स्थान बनाया ।

मन और इन्द्रिय संयम के नाम - श्रीराम

श्रीराम ने जिस वक्त जन्म लिया था राजे महाराजे अनेकों शादियाँ करते थे, एक से अधिक पत्नी रखना कोई अनैतिक बात नहीं मानी जाती थी, कोई राजा रूप और धन के लोभ में शादी करते थे तो कोई राज्यों की सीमाएँ बढ़ाने के लिए लेकिन श्रीराम ने अपने विवाह में पहली ही बार में सीताजी को सदैव एक पत्नी के रूप में रखने का वचन दे दिया था।

जंगल में एक बार जब रावण की बहन सूर्पणखा अत्यन्त सुंदर रूपवान स्त्री का भेष बनाकर श्रीराम के पास आयीं और उन्हें चिकनी चुपड़ी बातें करके अपने प्रेम जाल में फाँसने की कोशिश करने लगी तो श्रीराम ने पहले तो उसे कई बार नम्रतापूर्वक मना किया और अपनी प्रतिज्ञा के बारे में भी बताया लेकिन अपनी सीमा लाँघने के पश्चात भी जब शूर्पणखा नहीं मानी तो लक्ष्मण को आदेश देकर उसके नाक-कान काट कर उसे लँका भेज दिया।

सबको एक समान मानने वाले समदर्शी - श्रीराम

श्रीराम की नज़रे तो ऊंच-नीच, बड़ा-छोटा,अमीर-गरीब किसी को नहीं देखती थी, कहाँ नाव चलाकर अपना पेट भरने वाला साधारण सा केवट और कहाँ अयोध्या जैसे महान वैभवशाली साम्राज्य के युवराज श्रीराम, लेकिन अपना सब बड्डपन भूलकर उन्होंने केवट को न सिर्फ अपना मित्र कहा बल्कि अपने गले से लगाकर अपने भाई के समान प्यार भी दिया।

सबपर अपना असीम प्रेम लुटाने वाले श्रीराम जब सीता को खोजते खोजते वन में ऋषि मतंग के आश्रम पहुँचे तो ऋषि तो वहाँ नहीं थे लेकिन आश्रम की साफ-सफ़ाई करने वाली एक आदिवासी स्त्री जिसका नाम शबरी था आश्रम में ऋषि मतंग के कहे अनुसार उनकी राह देख रही थी। उस ग़रीब स्त्री ने जब देखा स्वयं श्रीराम आज उसके द्वार पर खड़े है उसकी ख़ुशी का कोई पार ना रहा। ख़ुशी के मारे वो इतनी बेसुध हो गयी की श्रीराम के लिए रखे बैर के फल पहले खुद चखती थी और मीठे बैर ही उन्हें खाने के लिए देती थी। लेकिन बैर थे तो जूठे !

कृपावत्सल श्रीराम ने शबरी के जूठे बैर ऐसे खाये मानों कौश्यल्या माता उन्हें राजभोग खिला रही हों। ऐसे करुणा और दया के सागर श्रीराम ने बार बार शबरी को माता कहा और उन्हें सद्गति प्रदान की।

मित्रता के लिए स्वयं पर अपयश लेने वाले - श्रीराम

जंगल में किष्किंधा नामक प्रदेश के दो वानर जाति के भाई बाली और सुग्रीव थे , बाली ने राजमद और शक्तिमद में आकर सुग्रीव से उसका राज्य, सम्पति और यहाँ तक की उसकी पत्नी को भी छीन लिया और सुग्रीव को ऋषमुख पर्वत पर भगा दिया, जहाँ उसकी मुलाकात श्रीराम से हुई। श्रीराम ने उसके साथ मित्रता की और जब उन्होंने बाली की कुटिलता के बारे में सुना तो सुग्रीव को वचन दिया की वे मित्र होने के नाते सुग्रीव को उसका हक़ अवश्य दिलवायेंगे।

बाली महापराक्रमी वानर था, उसकी वीरता से सब थर्राते थे, लेकिन श्रीराम ने बिना स्वयं की परवाह किये अपने मित्र के सुख की ख़ातिर बाली के साथ युद्द किया और पेड़ की औट का सहारा लेकर उसे मार गिराया।

बाली यह देखकर बोला हे विरपुरुष श्रीराम आप तो मुझे सामने से लड़कर भी हरा सकते थे फिर ये छुपकर वार करने का कलंक आपने क्यों लगाया तब श्रीराम बोले हे बाली अपने अधर्मपूर्वक अपने भाई की सम्पति और स्त्री पर अधिकार कर लिया था और ऐसे अधर्मी का वध किसी भी रीति से करना पाप नहीं हैं , लेकिन फिर भी यदि मुझपर यह अपयश लगेगा तो भी मुझे मित्रता की रक्षा करने हेतु यह स्वीकार है।

श्रीराम की मित्रता इतनी महान थी की स्वयं अपनी पत्नी सीता के खो जाने के महान दुःख को भी वे अपने मित्र के दुःख के आगे भूल गए और इतने दुःखी होने के बावज़ूद उन्होंने पहले अपने मित्र को संकट से मुक्त करवाया न की पहले अपने लिए कुछ सहायता माँगी।

सुग्रीव को किष्किंधा का राज्य देने के बाद श्रीराम धैर्य पूर्वक पास ही के पर्वत पर निवास करते हुए इंतज़ार करने लगे की सुग्रीव शीघ्र ही सीता जी की खोज में उनकी सहायता करेंगा लेकिन सत्ता पाकर सुग्रीव सब कुछ भूल गया और ३ - ४ महीने ऐसे ही गुज़र गए तब एक दिन लक्ष्मण जी को सुग्रीव की वादा-खिलाफी पर बहुत गुस्सा आया और वे गुस्से में भरकर सुग्रीव से युद्ध करने की तैयारी करने लगे - लेकिन तब भी दया और मित्रता की सीमा श्रीराम ने लक्ष्मण को ऐसा करने से

मना किया और कहा कि सिर्फ जाकर सुग्रीव को उसके वादे के बारे में याद दिलाओ।

एक महान प्रेमी और आदर्श पति - श्रीराम

आनंद रामायण में आता भगवान राम प्रतिज्ञा करते हैं कि सीता के अलावा अन्य सभी स्त्रियां मेरे लिए माता कौशल्या की तरह आदरणीय होगी और मैं जीवन भर एकपत्नीव्रत का पालन करूंगा|

स्कंद पुराण में भगवान राम कहते हैं की देवी सीता मुझसे उसी प्रकार अभिन्न है जिस प्रकार सूर्य से उसकी किरणे अभिन्न होती है |

सीता जी के अपहरण के पीछे का मुख्य कारण रावण की कुटिल चाल और सीता जी का स्वर्ण मृग पाने का लालच था लेकिन फिर भी श्रीराम स्वयं को सीता की उचित सुरक्षा न कर पाने के लिए दोष देते रहे।

वन में सीता जी की खोज करते समय वे पशु पक्षियों यहाँ तक की पेड़ों से भी लिपट कर रोते है और अपनी सीता के बारे में पूछते है। यह उनके निश्छल प्रेम का अनोखा उदाहरण है।

एक प्रसंग में वे कहते है की हे भाई लक्ष्मण अगर एक बार भी मुझे पता लग जाये की सीता कहाँ है तो मैं मृत्यु को भी जीतकर सीता को ले आऊं।

सीताजी की वियोग में श्रीराम की भूख प्यास और नींद तीनों गायब हो जाती है यह सीता के प्रति उन्हें महान प्रेम और समर्पण को स्पष्ट करता है।

शरण में आये हुए शत्रु को भी अभय देने वाले - श्रीराम

श्रीराम का एक और महान गुण सबके सामने आता है जब वह रावण के भाई विभीषण को अपनी शरण में बिना संकोच ले लेते है।

विभीषण भले ही सीधा हो पर असल में तो वह रावण का भाई था और हो सकता था की यह भी रावण की कोई चाल हो, श्रीराम को यह सब अनेकों वानरों और लक्ष्मण ने भी समझाया परन्तु श्रीराम ने सभी को एक ही उत्तर दिया - “मेरा तो प्रण है की शरण में आने वाले के सभी दोषों को भूलकर उसे सुधरने का अवसर देना और सब प्रकार से उसके भय को दूर कर देना।”

यह कहकर श्रीराम आगे बढ़े और दूर खड़े विभीषण को अपने गले से लगा लिया और कहा- “हे राक्षसराज आपका स्वागत है।” अर्थात विभीषण को रावण के अन्त के बाद लँका का भावी राजा भी घोषित कर दिया।

सुग्रीव का , अहिल्या का , शबरी का , मारीच का ऐसे अनेकों का उद्धार श्रीराम ने सिर्फ इसलिए कर दिया क्योंकि उन सब ने सच्चे मन से श्रीराम की शरण स्वीकार करी थी।

शत्रु के भी गुणों का सम्मान करने वाले - श्रीराम

रावण वध के बाद विभीषण ने पहले शोक व्यक्त करते हुए रावण के गुणों का वर्णन किया परंतु अंत में जब उसकी अंतिम संस्कार का प्रसंग आया तब उसने सीता हरण आदि गलत कामों को याद करके रावण का अंतिम-संस्कार करना अस्वीकार कर दिया- तब भगवान राम ने विभीषण से कहा- हे विभीषण, व्यक्तियों में मरने तक ही बैर रहता है| हमारा प्रयोजन सिद्ध हो चुका है| अब यह जैसे तुम्हारा भाई है, वैसा ही मेरा भी| रावण अधर्मी, असत्यवादी होने पर भी संग्राम में तेजस्वी बलवान तथा शूरवीर रहा है इंदिरा जी देवता भी से परास्त नहीं कर सकते थे| इसने आने को दान यज्ञ एवं श्रेष्ठ कर्म भी किए हैं| अतः तुम पुरानी बातों को भूल कर इसका अंतिम संस्कार करो|

रावण जिसने जीवन भर माता सीता को अनेकों कष्ट दिए और श्रीराम और उनके अनुचरों, ऋषिगणों के मार्ग में घोर दुःख उत्पन्न करता रहा उस रावण को काल के गाल में पहुँचाने वाले राम, स्वयं रावण के छोटे भाई विभीषण को सांत्वना देते हुए उसे रावण की मृत देह का विधिपूर्वक अंतिम-सँस्कार करने के प्रेरित करते है| उनके मन में रावण से नहीं उसके दुर्गुणों से बैर था|

वाल्मीकि रामायण के अनुसार “रावण को देखते ही राम मुग्ध हो जाते हैं और कहते हैं कि रूप, सौन्दर्य, धैर्य, कान्ति तथा सर्वलक्षणयुक्त होने पर भी यदि इस रावण में अधर्म बलवान न होता तो यह देवलोक का भी स्वामी बन जाता।”

– जब रावण मृत्युशैया पर पड़ा था, तब राम ने लक्ष्मण को राजनीति का ज्ञान लेने रावण के पास भेजा। भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि इस संसार में नीति, राजनीति और शक्ति का महान पंडित रावण अब विदा हो रहा है, तुम उसके पास जाओ और उससे जीवन की कुछ ऐसी शिक्षा ले लो जो और कोई नहीं दे सकता।

अपनी बात को सदैव विनम्रता से रखने वाले - श्रीराम

श्रीराम महान पराक्रम और सिद्धियों के स्वामी थे , उस समय सारे संसार में ऐसा कोई नहीं था जो उनकी बराबरी कर सके। उनके धनुष-बाण उठा लेने के बाद सारी दुनियाँ थर-थर काँपती थी लेकिन फिर भी श्रीराम ने कहीं भी गर्व से भरकर दूसरों को आदेश नहीं दिया बल्कि सिर झुकाकर पहले विनती ही करी।

सीता स्वयंवर के समय क्रोधित परशुराम के अपशब्दों को सहन करने का बाद भी वे उन्हें हाथ जोड़कर आदर ही देते रहे।

यहाँ समुद्र तट पर भी जब लंका जाने के लिए मार्ग खोजने की बात आयी तो श्रीराम जी ने समुद्र की पूजा कर उससे मार्ग देने का अनुरोध किया, तब भी विभीषण, लक्ष्मण आदि ने श्रीराम को कहा की हे प्रभु आपका एक बाण ही पुरे समुद्र को सुखा देने के लिए काफ़ी है लेकिन श्रीराम ने शक्ति प्रदर्शन के स्थान पर विनय और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा का ही सहारा लिया।

निर्लोभी और मातृभूमि के परम भक्त - श्री राम

रावण को परास्त करने के बाद नीति के अनुसार समस्त लंका और उसके वैभव के ऊपर भगवान राम का ही अधिकार हो चुका था, ऐसे में अगर वे चाहते तो स्वयं लंका का राजा बनकर सोने की लंका और उसके अतुलित सुख साम्राज्य का भोग कर सकते थे परंतु उन्होंने इस और तनिक भी ध्यान न देते हुए रावण के छोटे भाई विभीषण का राजतिलक किया और उन्हें धर्म पूर्वक प्रजा का कल्याण करते हुए राज्य करने का उपदेश दिया|

उसी अवसर पर भगवान राम ने लक्ष्मण को कहा कि लक्ष्मण मुझे यह स्वर्णमयीलंका तनिक भी प्रिय और रुचिकर नहीं है मेरे लिए तो मेरी मातृभूमि ही स्वर्ग से बढ़कर|

****